

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये द्युशीतितमं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নারাযণীযে দ্ব্যশীতিতমং দশকম্ ॥

বাণযুদ্ধং, নৃগমোক্ষং চ

প্রদ্যুম্নো রৌক্মিণেষঃ স খলু তর কলা

শম্বরেণাহতস্তং

হংরা রত্যা সহাপ্তো নিজপুরমহর -

দ্রক্ষিকন্যাং চ ধন্যাম্।

তৎপুত্রোহথানিরুদ্ধো গুণনিধিরহ -

দ্রোচনাং রুক্ষিপৌত্রীং

তত্রোদ্রাহে গতস্ত্বং ন্যরধি মুসলিনা

রুক্ষ্যপি দ্যুতরৈরাৎ ॥ 82.1 ॥

বাণস্য সা বলিসুতস্য সহস্রবাহো -

র্মাহেশ্বরস্য মহিতা দুহিতা কিলোষা।

ৎরৎপৌত্রমেনমনিরুদ্ধমদৃষ্টপূর্ং

স্বপ্নেহনুভূয ভগবন্ রিরহাতুরাহভূৎ ॥ 82.2 ॥

যোগিন্যতীর কুশলা খলু চিত্রলেখা

তস্যাঃ সখী রিলিখতী তরুণানশেষান্।

তত্রানিরুদ্ধমুষযা রিদিতং নিশাযা -

মানেষ্ট যোগবলতো ভরতো নিকেতাৎ ॥ 82.3 ॥

কন্যাপুরে দযিতযা সুখমারমস্তং

চৈনং কথঞ্চন ববক্ষুষি শর্র্বকৌ।

श्रीनारदोक्ततदुदन्तदुरन्तरोषै -

स्त्रुं तस्य शोणितपुरं यदुर्भिन्यरुक्काः ॥ 82.4 ॥

पुत्रीपालशैशलप्रियदुहितृनाथोहस्य भगवान्

समं भूतब्रूतैर्यदुबलमशक्कं निरुरुधे।

महाप्राणो बाणो ऋत्ति युयुधानेन युयुधे

शुहः प्रद्युम्नेन रमपि पुरहन्त्रा जघटिषे ॥ 82.5 ॥

निरुद्धाशेषास्त्रे मुमुक्षुषि तरास्त्रेण गिरिशे

द्रुता भूता बीताः प्रमथकुलरीराः प्रमथिताः।

परास्कन्दं स्कन्दः कुसुमशरवाणैश्च सचिरः

स कुम्भाशो भाशुं नरमिर बलेनाशु विभिदे ॥ 82.6 ॥

चापानां पञ्चशत्या प्रसभमुपगते

हिनचापेहथ बाणे

र्यर्थे याते समेतो ज्वरपतिरशनै -

रज्वरि रज्वरेण।

ज्वानी स्त्रुंराहथ दंरा तर चरितजुषां

रिज्वरं स ज्वरोहगां

प्रायोहन्तर्ज्वानरन्तोहपि च बह्वतमसा

रौद्रचेष्टा हि रौद्राः ॥ 82.7 ॥

बाणं नानायुधोग्रं पुनरभिपतितं दर्पदोषाद्वितन्त्रन्

निर्लूनाशेषदोषं सपदि बुबुधुषा शक्करेणोपगीतः।

तद्वाचा शिष्टबाह्वद्वितयमुभयतो निर्भयं तं प्रियं तं

मुक्त्वा तद्वदमानो निजपुरमगमः सानिरुद्धः सहोषः ॥ 82.8 ॥

मुहस्तारच्छक्रं ररुणमजयो नन्दहरणे

यमं बालानीतौ दरदहनपानेहनिलसखम्।

रिधिं रत्सस्तेये गिरिशमिह बाणस्य समरे  
रिभो रिश्रेत्कशी तदयमरतारो जयति ते ॥ 82.9 ॥

द्विजरुषा कृकलासरपुर्धरं  
नृगनृपं त्रिदिरालयमापयन्।  
निजजने द्विजभक्तिमनुत्तमा -  
मुपदिशन् परनेश्वर पाहि माम् ॥ 82.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये द्व्यशीतितमं दशकं समाप्तम् ॥